RNI No.-UPHIN/2018/77043

ISSN : 2582-2624

पीयर-रिव्यूड रेफर्ड जर्नल

भावक

हिंदी साहित्य : सृजन एवं चिंतन के विविध आयामों पर केंद्रित

खंड–5, अंक–3; चैत्र.–आषाढ़, 2080/अप्रैल–जून 2023

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

अनुक्रम

क्र. सं.	आलेख का शीर्षक	लेखक का नाम	पृ. सं.
•	आमुख ...	**सुनील बाबुराव कुलकर्णी**	05–05
•	संपादकीय ...	**उमापति दीक्षित**	07–08
1.	श्रीकृष्ण का गुरुत्वाकर्षण	**उदय प्रताप सिंह**	09–15
2.	राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका	**बी. नंदा जागृत**	16–29
3.	'पर' के लिये 'स्व' के विसर्जन की प्रतिमूर्ति : कट्टो (जैनेंद्र कुमार के उपन्यास 'परख' के विशेष संदर्भ में)	**अनामिका जैन**	30–38
4.	स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका : एक विश्लेषण	**अमित सिंह**	39–49
5.	भारतीय राम–काव्य परंपरा में गोस्वामी तुलसीदास का प्रदेय	**प्रीति सिंह**	50–59
6.	वैदिक ऋचाओं में प्रकृति और स्त्री–पुरुष का सह–अस्तित्व	**किरन श्रीवास्तव**	60–68
7.	नक्काशीदार केबिनेट और सच और सिसकता पंजाब	**योगेन्द्र सिंह**	69–79
8.	हिंदी का वर्तमान साहित्यिक–परिदृश्य : दृष्टि और मूल्यांकन	**रमेश चंद सैनी**	80–86
9.	हिंदी रामकाव्यों में जीवन–मूल्य	**रीना प्रताप सिंह**	87–92
10.	"पश्चिमी जर्मनी और उपभोक्तावादी संस्कृति : 'पश्चिमी जर्मनी पर उड़ती नजर' यात्रा–वृत्तान्त के विशेष संदर्भ में"	**स्मृति रेखा नायक**	93–98

भारतीय राम-काव्य परंपरा में गोस्वामी तुलसीदास का प्रदेय

–प्रीति सिंह

रमते कणे कणे इति रामः अर्थात जो कण-कण में व्याप्त है, वही राम है। राम कथा को जन-जन तक पहुँचाने का श्रेय गोस्वामी तुलसीदास को जाता है। रामभक्ति शाखा के कवियों में गोस्वामी तुलसीदास सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। तुलसीदास ने अपनी लोक मंगलकारी काव्य रचनाओं के माध्यम से मानव जीवन में नवीन चेतना और दिव्य शक्ति का संचार निरन्तर किया है। मानव प्रकृति के जितने रूपों का हृदयग्राही एवं सजीव वर्णन गोस्वामी तुलसी ने किया है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। तुलसीदास की भक्ति अनन्य भाव की है। वे प्रथम राम भक्त है, तत्पश्चात् कवि। उनके संपूर्ण साहित्य का हेतु ही श्रीराम का गुणगान करना है। 'करन चहौ रघुपति गुन गाथा।' अर्थात उनकी समस्त रचनाओं में श्रीराम के प्रति भक्ति-भाव का व्यापक रूप से उन्मेष हुआ है। तुलसीदास ने अपने काव्य में भक्ति का पूर्ण अनुसरण करते हुए राम से अपने उद्धार की प्रार्थना की है। यही कारण है कि रामकाव्य परंपरा में गोस्वामी तुलसीदास का राम काव्य भक्तों के हृदय का सर्वस्य बन गया। तुलसी अपने राम के अनन्य भक्त हैं।

''जेहि जोनि जनमउ कर्म बस, तहँ राम पद अनुरागऊ।
अब नाथ करि करुना बिलोकहु, देहु जो बर माँगऊ॥''

यहाँ तुलसीदास जी कहते है कि हे नाथ अब मुझ पर आप दयादृष्टि कीजिए और मैं वो वर माँगता हूँ उसे दीजिए। मैं कर्मवश जिस योनि में जन्म लूँ, वहीं श्रीराम जी (आप) के चरा कमलों में ही प्रेम करूँ। भारतीय काव्य परंपरा में राम-काव्य शिष्ट और लौकिक दोनों रूपों में विद्यमान है। हिंदी में रामकाव्य का प्रारंभ भक्तिकाल से माना जाता है, किंतु जब रामकाव्य परंपरा की चर्चा की जाती है, तो रामकथा अत्यंत प्राचीन समय से ही समाज में स्थापित है। आदिकवि बाल्मीकि जी द्वारा संस्कृत में लिखित रामायण ही रामकथा का मूल स्रोत व आधार है। अनेक भारतीय भाषाओं में रामकथा लिखी गई हैं। जो इस प्रकार हैं—